मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 7

nbt.india

जुलाई 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

सिओल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	3
गुजरात में पुस्तक प्रोन्नयन कार्यक्रम	3
केदारनाथ सिंह को मिला ज्ञानपीठ	3
अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 2014	4
नेपाल शिक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	4
बोलोना बाल पुस्तक मेला 2014	5
रा.पु. न्यास मुख्यालय-परिसर में बच्चों द्वारा वृक्षारोपण	5
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	6
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम बाल पुस्तकें	6
मंडी में पुस्तक मेला सह साहित्यिक कार्यक्रम	7
रायपुर में पुस्तकोन्नयन हेतु बैठक	7
मंडी में शिक्षा शिविर का आयोजन	8
कश्मीरी भाषा सलाहकार समिति की बैठक	8

नवीनतम प्रकाशन

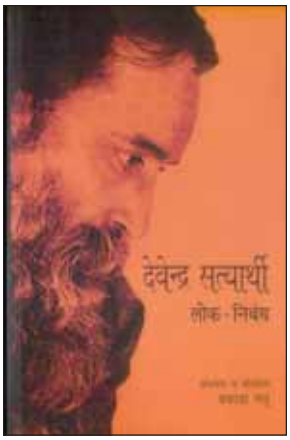

देवेन्द्र सत्यार्थी : लोक-निबंध

संचयन व संपादन : प्रकाश मनु

पृ. 456 ₹ 345

ISBN 978-81-237-7165-6

सिंगापुर एशियाई बाल साहित्योत्सव में भारत फोकस देश

सिंगापुर में 30 मई से 4 जून, 2014 के दौरान आयोजित एशियाई बाल साहित्य उत्सव (एएफसीसी) में भारत फोकस देश के रूप में शामिल हुआ। नेशनल बुक डेवलपमेंट काउंसिल ऑफ सिंगापुर द्वारा नेशनल लाइब्रेरी बिल्डिंग, सिंगापुर में आयोजित इस साहित्योत्सव में 85 संवाद एवं छह विशिष्ट सत्र हुए जिनमें बड़ी संख्या में शिक्षक, अभिभावक, लेखक, चित्रकार, संपादक, प्रकाशक एवं मीडियाकर्मी शामिल हुए। महोत्सव में लगभग 40 पुस्तकों के लोकार्पण हुए जिनमें क्रिस्टोफर चांग की पुस्तक 'वाटर' के तमिल एवं हिंदी अनुवाद भी शामिल थे। विदित हो कि एएफसीसी द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के उक्त भाषाओं में अनुवाद राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित किए गए थे।

इस साहित्योत्सव का उद्घाटन सिंगापुर गणराज्य के संस्कृति एवं युवा मंत्री श्री लॉरेंस वॉन्ग ने किया। श्रोताओं से मिली भारी प्रशंसा एवं वाहवाही के बीच श्री वॉन्ग ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत एवं संपूर्ण भारतीय प्रतिनिधिमंडल को, महोत्सव में भारत मंडप में भारत के वैभवपूर्ण बाल साहित्य की भव्य प्रस्तुति हेतु, धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने विश्व एवं इसके इतिहास के बारे में बच्चों को शिक्षित करने में कहानियों के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, एक-दूसरे की कहानियों को पढ़ना भी समुदायों-देशों को एक-दूसरे से बाँधती है।

सिंगापुर में भारत की उच्चायुक्त सुश्री विजय ठाकुर सिंह इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थीं। अपने संबोधन में सुश्री सिंह ने जहाँ भारत की महान कथावाचन परंपरा को याद किया वहीं उन्होंने आयोजनकर्ता को इसके लिए धन्यवाद भी दिया कि उन्होंने सिंगापुर एवं भारत के बीच राजनयिक संबंध की स्थापना के स्वर्ण जयंती समारोह की पूर्व संध्या पर भारत को इस बाल साहित्योत्सव में फोकस देश का सम्मान दिया। इससे पूर्व, भारतीय उच्चायुक्त ने दोनों देशों के लेखकों, चित्रकारों, अधिकारियों एवं अन्य गणमान्य लोगों की उपस्थिति में, महोत्सव में स्थापित भारत मंडप का फीता काटकर औपचारिक रूप से उद्घाटन किया।

उद्घाटन समारोह में एएफसीसी सलाहकार बोर्ड की अध्यक्ष सुश्री क्लेअर चियांग ने एएफसीसी को श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य के विकास एवं उत्सव के लिए 'उभरती हुई भूमि' बताते हुए कहा, ''ट्रांस-मीडिया संवाद, किशोरोपयोगी कथा, द्विभाषिता एवं बाल साहित्य अनुवाद पर फोकस करके इस महोत्सव ने नई पीढ़ी के लेखकों को तैयार करने में महत्वपूर्ण कार्य किया है।'' उद्घाटन-सत्र में उपस्थित गणमान्यों में शामिल थे—एएफसीसी के कार्यकारी निदेशक, श्री आर. रामचंद्रन, महोत्सव-निदेशक केनेथ क्वेक एवं रा.पु. न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर।

एशियाई बाल साहित्य मोहत्सव 2014 ने भारतीय लेखकों, चित्रकारों एवं प्रकाशकों को विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्राचीन काल से लेकर आज तक की विविध

एवं समृद्ध बाल साहित्य एवं कथावाचन की परंपरा के लिए एक सजीव मंच उपलब्ध कराया। महोत्सव में भारतीय प्रस्तुति में शामिल थे–हाल में प्रकाशित हिंदी, अँग्रेजी, गुजराती एवं तमिल की लगभग 200 बाल पुस्तकें; भारत में बाल साहित्य की चाक्षुष यात्रा को दरशाते विशेष रूप से निर्मित पैनलों का एक सेट तथा भारत के पौराणिक एवं कथावाचन परंपरा के चरित्र, यथा गणेश एवं व्यास, तेनालीराम, अकबर-बीरबल, बेताल एवं विक्रमादित्य, गोपाल भांड तथा आर. के. नारायण के प्रसिद्ध पात्र, स्वामी आदि के विशाल कट-आउट। इस मंडप की अभिकल्पना न्यास में उप निदेशक (कला) श्री देबू सरकार की थी।

महोत्सव में फोकस देश प्रस्तुति के एक भाग के रूप में विविध विषयों पर पैनल विमर्श का आयोजन किया गया। इन विषयों में शामिल थे–सृजनात्मकता के साथ कूँची : मेरी रंगारंग कहानी; हमारी कहानियों की लड़कियाँ क्या कर रही हैं : भारतीय बाल साहित्य में लिंग के मुद्दे; भूत, वर्तमान, भविष्य : बाल साहित्य का पुनराविष्कार; मुझमें, मेरे लेखन में बच्चे; चित्रों में भारत : कॉमिक्स एवं चित्रात्मक उपन्यास तथा जंगल की बातें : भारतीय बाल साहित्य में पशु एवं चिड़ियाँ।

इन कार्यक्रमों में वक्तागण एवं संचालकों में प्रख्यात लेखक, संपादक, प्रकाशक एवं चित्रकार शामिल थे। ये थे–अरूप कुमार दत्ता, दीपा अग्रवाल, जस्टिस लीला सेठ, अतित्य जैदी, नवीन मेनन, मंजुला पद्मनाभन, दिविक रमेश, उषा वेंकटरमण, सुबीर शुक्ला, अतनु रॉय, संपूर्ण चटर्जी, नीना सबनानी, गीतांजलि चटर्जी एवं एस.के. खुराना। भारतीय पक्ष का नेतृत्व न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने किया जिनका सहयोग न्यास में राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र एवं असमिया भाषा संपादक श्री दीप सैकिया ने किया।

1 जून, 2014 को 'भारतीय साहित्यिक सितारों से मिलिए' और 'इंडिया नाइट' जैसे कार्यक्रमों के जरिये भारत तथा विश्व के अन्य भागों से आए लेखकों एवं चित्रकारों के बीच आपसी भेंट और संवाद का एक बेहतरीन सुयोग मिला। इस अवसर पर सिंगापुर गणतंत्र के छठे राष्ट्रपति श्री एस.आर. नाथन; राज्य, शिक्षा एवं संचार तथा सूचना की मंत्री सुश्री सिम एन और सिंगापुर में भारतीय उच्चायुक्त सुश्री विजय ठाकुर सिंह सम्मानित अतिथि थीं। सिंगापुर स्थित भारतीय फाइन आर्ट्स सोसायटी द्वारा भारतीय सांस्कृतिक प्रस्तुति ने उस शाम के कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए।

सिओल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

दक्षिण कोरिया के सबसे बड़े पुस्तक आयोजन, सिओल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला का 11 से 22 जून, 2014 तक सिओल के कन्वेंशन एंड एक्जीबिशन सेंटर में आयोजन किया गया। इस मेले में 23 देशों से लगभग 370 प्रकाशकों ने भाग लिया। पुस्तक मेले का थीम था–पुस्तकों के माध्यम से दुनिया को देखें, भविष्य का अवलोकन पुस्तकों के माध्यम से करें।

पुस्तक मेला का उद्घाटन करते हुए दक्षिण कोरिया के संस्कृति, खेलकूद एवं पर्यटन मंत्री, श्री यू जिन्रयोन्ग ने कहा, ''कोरियाई सरकार प्रकाशन उद्योग को विभिन्न नीतिगत समर्थन देना जारी रखेगी ताकि यह सृजनात्मक उद्योग एवं सांस्कृतिक समृद्धि के एक युग का नेतृत्व करने के एक सोपान के रूप में कार्य कर सके। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक मेला विश्व के लोगों को पुस्तकों के माध्यम से एक-दूसरे से संवाद करने एवं एक-दूसरे को समझने का एक अवसर उपलब्ध कराएगा।'' ओमान पुस्तक मेला में सम्मानित अतिथि देश के रूप में शामिल था। ओमान की पुस्तकों के प्रदर्शन के अलावा अन्य प्रस्तुतियों में शामिल थे ओमानी परंपरा एवं उपकरण, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत रॉयल ओमान सिंफनी ऑर्केस्ट्रा द्वारा एक कंसर्ट प्रस्तुत किया गया। मेहंदी लगाने की ओमानी स्त्रियों में प्रचलित परंपरा का भी प्रदर्शन किया गया।

इसके अलावा, कोरिया के इटली के साथ राजनयिक संबंध की 130वीं वर्षगाँठ मनाने के वास्ते इटली को सांस्कृतिक फोकस देश के रूप में आमंत्रित किया गया।

मेले के दौरान अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन किये गए। इनमें शामिल थे–लेखकों से मिलिए, पुस्तक परामर्श कार्यक्रम आदि।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत भर के प्रकाशकों की लगभग 150 पुस्तकों की प्रदर्शनी के साथ मेले में शामिल हुआ। न्यास-स्टॉल लेखकों, अनुवादकों, चित्रकारों, प्रकाशकों एवं पुस्तक-प्रेमियों के एक बड़े समूह को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा। इन आगंतुकों ने भारतीय प्रस्तुति में गहरी रुचि दिखाई, खासकर भारतीय संस्कृति, बौद्ध दर्शन एवं टैगोर तथा गाँधी पर एवं उनके द्वारा लिखित पुस्तकों में।

इसके अलावा, रा.पु. न्यास ने कोरियाई लेखकों एवं अनुवादकों की संस्था, इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज, के साथ भारतीय पुस्तकों के कोरियाई भाषा में प्रकाशन हेतु संभावित सहयोग पर भी बातचीत की।

पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से अँग्रेजी भाषा संपादक श्री द्विजेंद्र कुमार ने भाग लिया।

केदारनाथ सिंह को मिला ज्ञानपीठ

हिंदी के वरिष्ठ कवि श्री केदारनाथ सिंह को वर्ष 2013 का प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। ज्ञानपीठ पाने वाले वे 10वें हिंदी लेखक हैं। उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं में शामिल हैं–*अभी बिलकुल अभी* एवं *यहाँ से देखो*। उन्होंने निबंध एवं कहानियाँ भी लिखी हैं।

विदित हो कि श्री सिंह द्वारा संपादित एक पुस्तक 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविताएँ' का राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशन हुआ है।

गुजरात में पुस्तक प्रोन्नयन कार्यक्रम

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा गुजरात के जनजाति-बहुल जिले–डांग, नवसारी एवं नवसाड में 12 से 18 जून, 2014 के दौरान एक विशिष्ट पुस्तक प्रोन्नयन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रा.पु. न्यास का सचल पुस्तक प्रदर्शनी वाहन कुछ चुनिंदा पुस्तकों के साथ इन जिलों के विभिन्न स्कूल, कॉलेज एवं अन्य संस्थाओं में घूमा। इस कार्यक्रम का प्रारंभ डांग जिले के वघई और आहवा से हुआ जिसमें गुजरात हिल काउंसिल का सहयोग रहा।

इसके अलावा, भीनार, वांसदा, नवसारी में 15 जून को 'जनजातीय क्षेत्रों में पुस्तक प्रोन्नयन' विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिनमें विभिन्न समुदायों के वक्ताओं ने भाग लिया। वांसदा के पूर्व महाराजा श्री दिग्वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और भरूच के प्रख्यात शिक्षाशास्त्री श्री रणछोड़ शाह ने बीज वक्तव्य दिया। अन्य वक्ता थे–श्री डाह्याभाई वादु, डॉ. मधुकर पाडवी, डॉ. दक्षा व्यास, डॉ. विक्रम चौधरी, डॉ. दिलीप गामीत, श्री धीरूभाई पटेल, श्री कुलिन पटेल, श्री योगेश भट्ट एवं श्री जीतेंद्र वसावा। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता श्री कल्याणजीभाई पटेल ने की।

संगोष्ठी का आयोजन बहादुरभाई पटेल स्मारक समिति के सहयोग से किया गया। समिति के सचिव श्री परषोत्तमभाई पटेल ने आगंतुकों का स्वागत किया एवं समिति के उपाध्यक्ष श्री रमणलाल पटेल ने समापन उद्बोधन किया।

अनेक कार्यक्रमों के आयोजन के क्रम में 18 जून को वलसाड में शिक्षकों के लिए 'कथा लेखन एवं वाचन कला' विषय पर तथा बच्चों के लिए 'चित्र बनाएँ' विषय पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में क्रमशः सुश्री जागृति रामानुज एवं चित्रकार श्री सिद्धार्थ रामानुज स्रोत-व्यक्ति थे। इन कार्यशालाओं का

आयोजन 'आर्च' (एआरसीएच) के सहयोग से किया गया। बाल गतिविधि कार्यक्रमों में सुश्री नाहेदा शेख स्रोत-व्यक्ति के रूप में थीं।

इन आयोजनों में डॉ. ए.जी. पटेल, श्री लालूभाई वसावा (डांग) और श्री रश्मि कापड़िया (वलसाड) का विशेष सहयोग मिला।

रा.पु. न्यास में गुजराती भाषा संपादक एवं गुजरात, दादरा नगर हवेली एवं दीव के लिए पुस्तक प्रोन्नयन नोडल अधिकारी श्री भाग्येंद्र पटेल ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 2014

अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला के 24वें संस्करण का 30 अप्रैल, 2014 को अबूधाबी के राजकुमार, महामहिम जेनरल शेख मोहम्मद बिन जायद अल नहयान तथा संस्कृति, युवा एवं सामुदायिक विकास मंत्री शेख नहयान बिन मुबारक अल नहयान ने उद्घाटन किया।

इस बार पुस्तक मेले में स्वीडेन को सम्मानित अतिथि देश का दर्जा दिया गया। इस अवसर पर स्वीडेन द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी के अलावा राष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी दरशाया गया। स्वीडेन के विविध पक्षों की प्रस्तुति के क्रम में अनेकविध कार्यक्रम एवं गतिविधियों के आयोजन हुए। इसमें बड़े पैमाने पर स्वीडेन के लेखक, कवि, चित्रकार आदि सम्मिलित हुए।

पुस्तक मेले में 57 देशों के 1125 प्रदर्शकों ने भाग लिया। प्रदर्शनी में 33 भाषाओं की 5 लाख से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। इस बार गत वर्ष की तुलना में अधिक प्रदर्शक आए। विगत कई वर्षों की भाँति इस वर्ष भी पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की भागीदारी रही। रा.पु. न्यास भारत भर के प्रकाशकों की ओर से एक नोडल प्रतिभागी के रूप में भाग लेता है। भारतीय स्टॉल पर पुस्तक-प्रेमियों ने काफी रुचि दिखाई। भारतीय पक्ष का प्रतिनिधित्व, रा.पु. न्यास में उप निदेशक (विक्रय) मो. इमरानुल हक ने किया। मो. हक ने मेला के सह-आयोजक श्री इब्राहीमी के साथ एक बैठक की। इस अवसर पर नई दिल्ली स्थित इंडो-अरब कल्चर सेंटर के निदेशक श्री जकलुर रहमान भी उपस्थित थे।

अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला के अवसर पर 'ब्लैक बॉक्स सिनेमा प्रोजेक्ट' का भी उद्घाटन किया गया, जिसके अंतर्गत पूरे मेला-अवधि के दौरान अमीरात की अनेक फिल्मों का प्रदर्शन होता रहा। पुस्तक मेले में अनेक संगोष्ठियों के भी आयोजन किये गए। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 'शेफ' द्वारा 'कूकिंग' का जीवंत प्रदर्शन भी किया गया।

अंतरराष्ट्रीय अबूधाबी पुस्तक मेला में आगंतुक विद्वानों के लिए अलग से एक विशिष्ट कोना बनाया गया था।

'अमीरात लेखक कोना' एक खास जगह था जिसमें दस पुरुष एवं महिला लेखकों ने तीन अलग-अलग काल-अवधि एवं लेखन के विविध पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हुए भाग लिया।

'चित्रकार कोना' में सुलेखकार, कला शिक्षक, ग्राफिक कलाकार से लेकर डिजाइनर एवं बाल पुस्तक चित्रकार तक ने भाग लिया और अपने-अपने सृजनात्मक क्षमता से एक-दूसरे को परिचित कराया।

6 से 12 वर्ष तक बच्चों के लिए बने 'बाल कोना' में दिनभर बालोपयोगी गतिविधियाँ होती रहती थीं।

कुल मिलाकर, अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला एक अनोखा और विशिष्ट पुस्तक मेला था जहाँ पुस्तक संबंधी अनेकानेक गतिविधियों के अलावा आमने-सामने बैठकर (बीटूबी) विचारों और योजनाओं के आदान-प्रदान भी हुए तथा एक-दूसरे की समृद्ध एवं विविधरूपा संस्कृति एवं शैक्षिक कार्यक्रमों से भी परिचित होने का अवसर मिला।

नेपाल शिक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

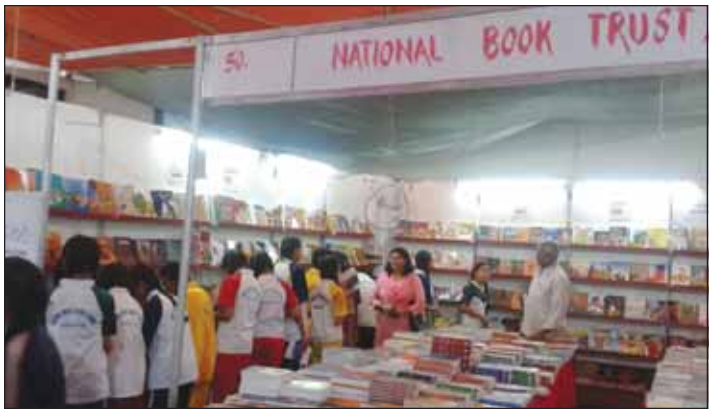

29 मई से 5 जून, 2014 के दौरान काठमांडू, नेपाल के भृकुटी मंडप में 18वें नेपाल शिक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। संयोगवश, पुस्तक मेला के उद्घाटन का दिन नेपाल का गणतंत्र दिवस भी था, सो, पुस्तक मेला के उद्घाटन का रंग कुछ अलग ही रहा। नेशनल बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन ऑफ नेपाल (NBPAN) के अध्यक्ष, श्री वसंत थापा के स्वागत-उद्बोधन के बाद नेपाल का राष्ट्रीय गीत गाया गया। अतिथियों, पुस्तक-प्रेमियों, लेखकों एवं आगंतुकों की गरिमामयी उपस्थिति में आकाश में रंग-बिरंगे गुब्बारे छोड़े गए। इस अवसर पर प्रदर्शक, प्रकाशक एवं बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी भी उपस्थित थे।

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी भारतीय प्रकाशकों का नेतृत्व राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने किया। न्यास अपने प्रकाशनों समेत भारत भर के चुनिंदा प्रकाशकों की 752 पुस्तकें प्रदर्शनार्थ ले गया था। ये पुस्तकें हिंदी, अँग्रेजी एवं नेपाली भाषा में थीं।

इस वर्ष पुस्तक मेला का थीम था—*मूविंग अवे फ्रॉम इग्नॉरेंस।*

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से इस पुस्तक मेला में न्यास में उप निदेशक (विक्रय) मो. इमरानुल हक ने प्रतिनिधित्व किया। सहयोग दिया श्री सुरेश कुमार एवं श्री सुनील कुमार यादव ने।

बोलोना बाल पुस्तक मेला 2014

इटली के शहर बोलोना में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बाल पुस्तक मेला का आयोजन किया गया। यह मेला 24 से 27 मई, 2014 की अवधि में आयोजित किया गया। इस बार के मेले में 74 देशों के लगभग 1200 प्रदर्शकों ने भाग लिया। ब्राजील को सम्मानित अतिथि देश का दर्जा दिया गया। आयोजक के अनुसार, इस बार के बोलोना बाल पुस्तक मेले में दुनियाभर से 30 हजार से अधिक चित्रकार, लेखक, प्रदर्शक एवं व्यापारी आए।

विदित हो कि बोलोना में 1963 से प्रारंभ हुआ यह बाल पुस्तक मेला अब बहुत बड़ा स्वरूप ग्रहण कर चुका है। हाल के वर्षों में इस पुस्तक मेला के समांतर बोलोना लाइसेंसिंस व्यापार मेला एवं एक्सपो-पिक्सेल नाम से दो अन्य मेले भी लगाए जाते हैं जिसके कारण यहाँ प्रकाशन, एनिमेशन एवं लाइसेंसिंस इन तीनों ही क्षेत्रों के दिग्गजों का जमावड़ा होता है। इस वर्ष पुस्तक मेले में 'बोलोना डिजिटल' नाम से एक नई पहल की शुरुआत हुई जिसमें डिजिटल मीडिया बाजार के विशेषज्ञों एवं व्यावसायिकों ने भाग लिया। इस 'डिजिटल कैफे' ने परंपरागत मुद्रण से डिजिटल प्रकाशन में प्रवेश के अनेक आयामों पर बहुविध कार्यक्रमों के आयोजन किए।

मेले में अनेक कैफे या कोने बनाए गए थे, यथा–चित्रकार कोना, लेखक कोना, डिजिटल कोना और अनुवादक कोना आदि। इन कैफे या कोनों में प्रतिदित अनेक बैठक और संगोष्ठियों के आयोजन होते थे। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशकों के लिए कार्यशालाओं के आयोजन हुए और आम पुस्तक-प्रेमियों के लिए लेखकों द्वारा प्रतिदिन पठन या वाचन के सत्र चले।

पुस्तक मेले के दौरान विभिन्न श्रेणियों में अनेक पुरस्कारों की घोषणा एवं उन्हें विजेताओं को प्रदान करने का कार्यक्रम पुस्तक मेले का एक बड़ा आकर्षण था। अईबीबीआई द्वारा प्रायोजित, बाल साहित्य का ऑस्कर माना जाने वाला, प्रतिष्ठित हैंस क्रिश्चियन एंडरसन अवार्ड ब्राजील के चित्रकार रोजर मेलो के नाम रहा, वहीं लेखक को दिए जाने वाले इस सम्मान के विजेता रहे जापानी लेखक नहोको यूहाशी। प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंगरेन मेमोरियल अवार्ड स्वीडेन के लेखक बारब्रो लिंगरेन को प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने पुस्तक मेले में भारत भर के 20 प्रकाशकों की चुनिंदा 161 पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई। आगंतुकों को इन पुस्तकों के विवरण से युक्त एक विशिष्ट सूचीपत्र के साथ कुछ अन्य प्रचार सामग्री वितरित किये गए। रा.पु. न्यास का स्टॉल वैसे भारतीय व्यापार आगंतुकों के लिए एक सम्मिलन स्थल के रूप में था

जिनका कोई स्टॉल नहीं था। भारत के प्रकाशकों, यथा–तूलिका, कराडी टेल्स, डकबिल एवं रत्नसागर आदि ने इस सुविधा का लाभ उठाया। रा.पु. न्यास की पुस्तकों के प्रतिलिप्यधिकार के संबंध में विदेशी प्रतिनिधियों द्वारा व्यापक पूछताछ की गई, विशेषकर अफ्रीकी देशों द्वारा।

बोलोना के इस बाल पुस्तक मेले में रा.पु. न्यास की ओर से मलयालम भाषा संपादक श्री रूबिन डी'क्रूज ने भाग लिया।

रा.पु. न्यास मुख्यालय-परिसर में बच्चों द्वारा वृक्षारोपण

राष्ट्रीय पुस्तक न्सास मुख्यालय-परिसर, नई दिल्ली में 3 जुलाई, 2014 को कुछ अलग ही नजारा दिखा। रेयॉन इंटरनेशनल स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली के बच्चों के हाथों में खुरपी थे और वे पेड़ लगाने के लिए उत्सुक हो रहे थे। दरअसल, पर्यावरण-जागरूकता के मद्देनजर ये बच्चे अपने शिक्षकों के साथ न्यास-परिसर में आए थे। न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर एवं न्यास में उप निदेशक (विक्रय) मो. इमरानुल हक बच्चों का उत्साहवर्धन कर रहे थे और उनका इस पर्यावरण-पहल पर मार्ग निर्देशन कर रहे थे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

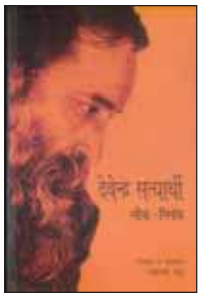

देवेन्द्र सत्यार्थी : लोक-निबंध

संच. व संपा. : प्रकाश मनु पृ. 456 ₹ 345

देवेन्द्र सत्यार्थी भारत के अनोखे लोकयात्री थे, जिन्होंने लोकगीतों की खोज में देश का चप्पा-चप्पा छान मारा और भारत के अलग-अलग अंचलों के तीन लाख से ज्यादा लोकगीत इकट्ठे करके उन पर बहुत सुंदर और गवेषणापूर्ण लेख लिखे।

'देवेन्द्र सत्यार्थी : लोक निबंध' पुस्तक देश के अलग-अलग अंचलों पर लिखे गए सत्यार्थी जी के रस-रागपूर्ण लेखों का संचयन है, जिसमें मिट्टी की सुवास और भावनाओं की उष्मा है। इस पुस्तक से गुजरते हुए भारतीय लोक संस्कृति का एक संपूर्ण इंद्रधनुषी बिंब हमारी आँखों के आगे उभरता है। पुस्तक का संपादन वरिष्ठ कवि-कथाकार और आलोचक प्रकाश मनु ने किया है।

ISBN 978-81-237-7165-6

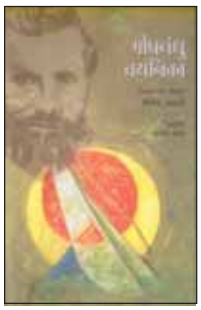

गोपबंधु चयनिका

संक. एवं संपा. : प्रीतीश आचार्य

अनु. : अरुण होता पृ. 328 ₹ 280

बीसवीं शताब्दी के ओड़िया में सामूहिक जीवन की नींव डाली जा सकती है और प्रादेशिकता की संकीर्ण धारा को राष्ट्रीय आंदोलन में तब्दील करने में उत्कलमणि गोपबंधुदास (1877-1928) की भूमिका उल्लेखनीय है। स्वाधीनता संग्राम, समाजसेवा, राजनीति, शिक्षा, पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में उनकी निर्मल संपृक्ति और आधुनिक ओड़िया की समाज दृष्टि को परिष्कृत और प्रशस्त बनाने के साथ प्रतिश्रुत और स्वप्न प्रदान किया था। ओड़िया की राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में वे श्रद्धेय और प्रेरणा के प्रतीक थे। इस पुस्तक में उनके कुछ चुने हुए निबंध और कॉलम संकलित हैं।

ISBN 978-81-237-7169-4

जो दीखता है और जो दिखता नहीं

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी पृ. 272 ₹ 220

यात्राएँ करना, वहाँ के स्थानों को नए नजरिये से देखकर कुछ हटकर समझना और फिर उन्हें संस्मरण के रूप में लिखना, वह भी पत्र शैली में! निश्चित ही यह एक अनूठा प्रयास है और इस तरह के लेखन की चुनौती वही ले सकता है, जिसने जीवन को अपने सलीके से जीने का संकल्प कर रखा हो। यह पुस्तक भारत व विदेशों के कुल सोलह ऐसे यात्रा-वृत्तांत प्रस्तुत करती है जो उन स्थानों पर बार-बार जाने वालों को भी चौंका देंगे कि क्या इस पर्यटन स्थल का असल इतिहास, भावना और संस्कार यही हैं? यहाँ दर्शन, अध्यात्म, नए स्थान को देखने का आनंद, सभी कुछ एक साथ चलता है। ISBN 978-81-237-7140-3

सम्पत्ति शास्त्र

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

संक. तथा भूमिका : कृष्णदत्त पालीवाल पृ. 336 ₹ 265

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिंदी के युगप्रवर्तक चिंतकों में अग्रणी रहे हैं। उनके ही प्रयासों से हिंदी में नवीन विचारधारा, नवजागरण तथा स्वाधीन चिंतन का आरंभ हुआ। आचार्य द्विवेदी ने हिंदी गद्य तथा पद्य की एक पक्की अवस्था को अपनाया और खड़ी बोली को नए जीवन संग्राम की भाषा बनाया। स्वयं द्विवेदी जी का कहना है कि सम्पत्ति शास्त्र इतने महत्व का है कि इस पर पुस्तक लिखना सबका काम नहीं। इस बेजोड़ और महत्वपूर्ण पुस्तक का संकलन तथा भूमिका हिंदी के सुपरिचित विद्वान प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल ने लिखी है। ISBN 978-81-237-7139-7

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम बाल पुस्तकें

फिर खिल गए फूल

कुसुमलता सिंह

चित्र : पार्थ सेनगुप्ता पृ. 16 ₹ 35

जंगल में फूल खिले हैं—रंग-बिरंगे, ढेर-ढेर फूल। एक दिन वहाँ पहुँच गया चोर, जिसे फूलों से बेहद नफरत था। उसने जंगल से फूलों को तोड़ा और उन्हें बाँध लिया एक गठरी में। छोटी फुदकी चिड़िया यह देखकर दुखी थी और वह फूल चोर को पकड़वाने के जतन में लग गई। कठफोड़वा ने उसकी बात सुनी, कुछ विचारा और सूख चुके इन फूलों को गठरी में बाँधकर ले जा रहे चोर का पीछा किया। उसने गठरी में चोंच मारकर छेद कर दिया। फूल के बीज बिखर गए और वर्षा-जल का स्पर्श पा फिर से खिल उठे। सारे जंगल में अब फिर से फूल-ही-फूल थे। ISBN 978-81-237-7147-2

किस हाल में मिलोगे दोस्त

विमला भंडारी

चित्र : निधि सिंह और *अपूर्व जैन* पृ. 20 ₹ 50

कागज के गोदाम में एक मटमैला एवं खुरदुरे कागज और दूसरा सफेद एवं चिकने कागज का रोल रखा है। एक दिन एक प्रेस का मालिक आकर दोनों कागजों को खरीद ले गया। दोनों को बाहर की हवा अच्छी लगी। समय का फेर, चिकने कागज पर किताब छपी और खुरदुरे पर अखबार। फिर, दोनों किसी-न-किसी संयोग से कहीं-न-कहीं मिलते रहते। सोनू ने किताब खरीदी तो उसी अखबार का कवर चढ़ाया। अखबार का कवर फिर चने के ठोंगे के रूप में आया। अंत में दोनों अलग-अलग हो गए और उदास हो गए कि जाने फिर अब कब मुलाकात होगी! ISBN 978-81-237-7121-2

डाक्टर चींचू के कारनामे-2

आबिद सुरती पृ. 32 ₹ 70

प्रख्यात कार्टूनिस्ट और बाल साहित्यकार आबिद सुरती ने इस पुस्तक में 15 विषय संजोए हैं। हर विषय एक अलग अध्याय के रूप में है। हर अध्याय में कार्टून-रूप में चित्रों के साथ जो कहानी कही गई है उसमें विज्ञान से जुड़ी अनेक साधारण बातों की रोचक ढंग से जानकारी मिल जाती है। बच्चे कार्टून-रूप में विज्ञान के गूढ़ सिद्धांत समझ लें इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है! इसी अवधारणा पर है यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-7148-9

पाठक मंच बुलेटिन

(बच्चों की द्विभाषी पत्रिका)

वार्षिक शुल्क : ₹ 100.00

पत्रिका मँगवाने के लिए लिखें :

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मंडी में पुस्तक मेला सह साहित्यिक कार्यक्रम

जिला प्रशासन, मंडी, हिमाचल प्रदेश एवं हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने 16-22 जून के मध्य पड्डल मैदान मंडी में पुस्तक मेला के साथ साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। मेले का उद्घाटन जिलाधिकारी श्री देवेश कुमार मिश्रा ने किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा, ''किताबों में हजारों साल का ज्ञान समाहित है, इंटरनेट के युग में भी किताबों का कोई विकल्प नहीं है।'' बच्चों में किताबें पढ़ने की जरूरत पर बल देते हुए जिलाधिकारी ने कहा, ''भविष्य को बनाए व बचाए रखने के लिए जरूरी है उनमें पुस्तकों की नींव डालना।'' इस मौके पर भाषा अकादमी के निदेशक डॉ. अरुण कुमार शर्मा ने न्यास के प्रयास की सराहना करते हुए आगे भी पुस्तक से जुड़े अभियानों और पुस्तक संस्कृति के प्रसार में प्रशासन की तरफ से हर संभव सहयोग देने की बात कही। वहीं न्यास में हिंदी संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने कहा, ''पुस्तक मेरी माँ है और शब्द मेरे पिता और पाठक मेरी आत्मा। निश्चित ही जहाँ पुस्तक हमें ज्ञान देती है वहीं दूसरी तरफ हमें आगे बढ़ने को प्रोत्साहित भी करती है।'' उन्होंने न्यास के प्रयासों की जानकारी देते हुए पूरे भारत और दुनिया में पुस्तक संस्कृति के प्रसार के प्रयासों पर प्रकाश डाला। न्यास की ओर से सहायक निदेशक राजीव चौधरी और सहायक निदेशक मयंक सुरोलिया ने आमंत्रित अतिथियों को उपहारस्वरूप पुस्तकें भेंट कीं।

उद्घाटन के बाद अकादमी की तरफ से कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता *व्यंग्य यात्रा* के संपादक और चर्चित व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय ने की। मुख्य अतिथि थे, हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. श्याम सखा 'श्याम'। इस मौके पर स्थानीय 25 कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं।

17 की शाम को न्यास द्वारा आयोजित व्यंग्य पाठ का आयोजन किया गया। इसमें देश के चर्चित व्यंग्यकारों ने हिस्सा लिया जिसमें डॉ. हरीश नवल, डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. श्याम सखा 'श्याम', लालित्य ललित ने अपनी व्यंग्य रचनाएँ सुनाईं। इस सत्र की अध्यक्षता के के बिरला फाउंडेशन के निदेशक डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने की।

18 की शाम को 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में वरिष्ठ गीतकार डॉ. धनंजय सिंह और वरिष्ठ कवि डॉ. दिविक रमेश ने अपने रचनाकर्म से संबंधित लेखन पर प्रकाश डालते हुए अपने गीतों और कविताओं को सुनाते हुए आमंत्रित विद्वान श्रोताओं के सवालों का जवाब दिया।

19 की शाम को आधार प्रकाशन ने लेखक मंच में तीन कवियों का 'काव्य पाठ' आयोजिय किया जिसमें सुरेश सेन निशांत, अजेय और आत्मा रंजन शामिल थे। कार्यक्रम के अध्यक्षीय मंडल में शामिल थे वरिष्ठ लेखक और प्रगतिशील लेखक संगठन के अध्यक्ष श्री दीनू कश्यप, पंजाब विश्वविद्यालय के हिंदी प्रोफेसर डॉ. सत्यपाल सहगल, न्यास के हिंदी संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा।

20 की शाम हिमाचल और दिल्ली के रचनाकारों ने एक साथ 'कहानी पाठ' के सत्र में शिरकत की जिसमें गंगाराम राजी (सुंदर नगर), मुरारी शर्मा (मंडी) के अलावा बलराम, सुरेश उनियाल, महेश दर्पण, आकांशा पारे काशिव और सोनाली सिंह ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता कश्यप ने की और सान्निध्य रहा राकेश कुमार राकेश का।

रायपुर में पुस्तकोन्नयन हेतु बैठक

भारत के प्रत्येक राज्य में पुस्तक-प्रोन्नयन की अपनी आधारभूत नीति के तहत हाल ही में शुरू किये गए एक विशेष कार्यक्रम के तहत छत्तीसगढ़ में पुस्तकोन्नयन के लिए की जाने वाली गतिविधियों के संदर्भ में, पूर्व तैयारी के रूप में, रायपुर, छत्तीसगढ़ में एक बैठक आयोजित की गई। 14 जून, 2014 को आयोजित इस बैठक में डॉ. सुशील त्रिवेदी, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी; श्री विश्वरंजन, पूर्व डीजीपी; श्री संजय अलंग, प्रशासनिक अधिकारी; जिला कलेक्टर, मुंगेली के अलावा छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश पंकज भी मौजूद थे। सभी वक्ताओं ने न्यास के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि निस्संदेह इस तरह के प्रयासों से प्रदेश के रचनाकारों को अपनी बात कहने का एक प्लेटफॉर्म मिलेगा। इस मौके पर राज्य संदर्भ केंद्र के निदेशक श्री तुहिन देव भी उपस्थित थे। आस-पास के क्षेत्र के अनेक बुद्धिजीवियों को भी बैठक में आमंत्रित किया गया था। बैठक के बाद स्थानीय कवियों ने अपनी रचनाएँ भी सुनाईं जिनमें विश्वरंजन के साथ डॉ. संजय अलंग भी शामिल थे। कार्यक्रम-उपरांत राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी संपादक और छत्तीसगढ़ में पुस्तकोन्नयन हेतु जिम्मेवार नोडल अधिकारी, डॉ. ललित किशोर मंडोरा को छत्तीसगढ़ साहित्य समाज की ओर से सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर श्री मंडोरा ने कहा कि जल्द ही इस प्रदेश में साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे और नई संभावनाओं को भी तलाशा जाएगा।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/7/2014

मंडी में शिक्षा शिविर का आयोजन

हिमाचल प्रदेश में मंडी जिलांतर्गत मंडी एवं पंडोह में क्रमशः 19 एवं 20 जुलाई, 2014 को शिक्षा शिविर के आयोजन किये गए। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की इस विशेष परियोजना के अंतर्गत 19 जुलाई को मंडी में शिक्षा शिविर का आयोजन हुआ।

गवर्नमेंट सेंटर प्राइमरी स्कूल में आयोजित इस शिविर का उद्घाटन बाल मंडी की प्रखंड प्राथमिक शिक्षा अधिकारी सुश्री मुक्ता ठाकुर ने किया। अनेक गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

दूसरा कार्यक्रम पंडोह में 20 जुलाई को हुआ। गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन उपनिदेशक (प्राथमिक) श्री रमेश कुमार विद्यार्थी ने किया। अनेक अन्य गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

दोनों ही स्थानों पर बच्चों के लिए चित्रकारी, अनुच्छेद लेखन आदि गतिविधियाँ हुईं और बाद में विजेताओं को पुरस्कार दिये गए। शिक्षा शिविर में इन गतिविधियों के अलावा न्यास का सचल पुस्तक वाहन भी कार्यक्रम स्थल पर खड़े किये गए।

इन कार्यक्रमों का समन्वय न्यास में सहायक, श्रीमती सुनीता नरोत्रा ने किया।

कश्मीरी सलाहकार समिति की बैठक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास मुख्यालय, नई दिल्ली में 27 जून, 2014 को कश्मीरी भाषा सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित सदस्यगण थे–न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर (अध्यक्षता), अजीज हाजिनी, एम.के. रैना, गुलाम नबी आतिश, रतल लाल शांत, रुखसाना ज़बीन, प्यारे हताश एवं डॉ. अब्दुल मजीद बाबा। न्यास की ओर से बैठक में सहयोग किया न्यास में अँग्रेजी भाषा संपादक द्विजेंद्र कुमार ने।

बैठक में सदस्यों ने पिछली बैठक के बाद दस कश्मीरी पुस्तकों के प्रकाशन पर हर्ष व्यक्त किया। इस बैठक में लद्दाखी में भी पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार किया गया।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक :उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070